**(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)**

## एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

## MHL-C311

## प्राचीन एवं निर्गुण भक्ति काव्य

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

**इकाई–1**

1. संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो – सम्पा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह, साहित्य भवन प्रा०लि०, इलाहाबाद
   शशिव्रता विवाह प्रस्ताव – आरम्भ से छन्द संख्या 50 तक।
2. विद्यापति पदावली – सम्पा० रामवृक्ष बेनीपुरी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
   पद संख्या – 3, 27, 35, 36, 40, 46, 51, 57, 153, 159, 179, 183, 187, 193, 196, 205, 231, 241, 250, 252 (20 पद)।

**इकाई–2**

3. कबीर ग्रन्थावली – सम्पा० डॉ० श्याम सुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
   साखी – गुरुदेव कौ अंग, सुमिरण कौ अंग, विरह कौ अंग।
4. जायसी ग्रन्थावली – सम्पा० रामचन्द्र शुक्ल
   पदमावत – नागमती वियोग खण्ड।

**इकाई–3** पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, पृथ्वीराज रासो का महाकाव्यत्व, पृथ्वीराज रासो का काव्य–सौष्ठव, पृथ्वीराज रासो की भाषा।
विद्यापति पदावली में श्रृंगार एवं भक्ति, विद्यापति पदावली का वैशिष्ट्य, विद्यापति की गीति योजना, विद्यापति पदावली की भाषा।

**इकाई–4** कबीर का समाज–दर्शन, कबीर की भक्ति–भावना, कबीर की काव्य कला, कबीर का रहस्यवाद।
पदमावत का महाकाव्यत्व, जायसी की प्रेम–भावना, नागमती का विरह वर्णन, जायसी का रहस्यवाद।

**इकाई–5** **द्रुत पाठ** – द्रुत पाठ हेतु निर्धारित कवि– (1) सरहपा (2) अब्दुर्रहमान (3) रैदास (4) गुरुनानक (इनके काव्य का सामान्य अध्ययन ही अपेक्षित है। इन पर दीर्घ उत्तरी प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।)

---

संदर्भ ग्रन्थ :


1. चंदबरदायी और उनका काव्य – डॉ० विपिन बिहारी त्रिवेदी
2. विद्यापति – डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित
3. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. कबीर की विचारधारा – गोविन्द त्रिगुणायत
5. जायसी ग्रन्थावली – सम्पा० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (भूमिका भाग)
6. जायसी और उनका काव्य – डॉ० शिव सहाय पाठक
7. संदेश रासक (समीक्षा भाग) – सम्पा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथ त्रिपाठी
8. संत रैदास : कृतित्व, जीवन और विचार – योगेन्द्र सिंह
9. युग प्रवर्तक संत गुरु रविदास – पृथ्वी सिंह आजाद

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

# एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

## MHL-C312

## सगुण भक्ति काव्य

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

**इकाई–1**

1. भ्रमरगीत सार – सम्पा० रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
   पद सं०– 8, 13, 21, 22, 23, 24, 25, 27, 34, 37, 38, 42, 45, 52, 57, 61, 62, 64, 65, 75, 77, 82, 85, 89, 95 (25 पद)
2. रामचरित मानस – प्रका० गीता प्रेस गोरखपुर
   उत्तरकाण्ड (दोहा सं० 36 से 74 तथा 116 से 128 तक)

**इकाई–2**

3. मीराँबाई की सम्पूर्ण पदावली, सम्पा० डॉ० राम किशोर शर्मा, सुजीत कुमार शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
   पद सं० – 1, 3, 5, 14, 18, 19, 22, 34, 36, 54, 61, 70, 102, 137, 151, 155, 158, 159, 160, 179 (20 पद)
4. रसखान रचनावली – सम्पा० विद्यानिवास मिश्र, सत्य देव मिश्र, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
   सुजान रसखान – (आरम्भ के 10 छन्द)

**इकाई–3** भ्रमरगीत की विशेषताएँ, गोपियों का वाग्वैदग्ध्य, गोपियों का विरह वर्णन, भ्रमरगीत का कलागत वैशिष्ट्य।

उत्तरकाण्ड का काव्य सौष्ठव, तुलसी की भक्ति भावना, तुलसी का समन्वयवाद, रामचरित मानस का काव्य वैभव।

**इकाई–4** मीराँ की भक्ति भावना, मीराँ की काव्यगत विशेषताएँ, मीराँ की विरहानुभूति, मीराँ की भाषा।

रसखान की काव्यगत विशेषताएँ, भक्ति–भावना, प्रेमतत्व निरूपण, रसखान की भाषा।

**इकाई–5** **द्रुत पाठ**– द्रुत पाठ हेतु निर्धारित कवि– परमानन्द दास, नन्द दास, हित हरिवंश, रहीम।

(इनके काव्य का सामान्य अध्ययन ही अपेक्षित है। इन पर दीर्घ उत्तरी प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।)

---

संदर्भ ग्रन्थ :


1. भ्रमगीत सार (भूमिका भाग) – रामचन्द्र शुक्ल
2. सूर की काव्य साधना – गोविन्द राम शर्मा
3. सूर की काव्य कला – मनमोहन गौतम
4. तुलसी काव्य मीमांसा – डॉ० उदय भानु सिंह
5. मीरा का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी
6. रसखान और उनका काव्य – डॉ० माजदा असद
7. रहीम और उनका काव्य – डॉ० देशराज सिंह भाटी

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

# एम०ए०, हिन्दी साहित्य, प्रथम सेमेस्टर

## MHL-E313

## भाषा विज्ञान

पूर्णांक 100 | सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

**इकाई–1** भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विशेषताएँ, भाषा परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, भाषा संरचना और भाषा प्रकार्य।

भाषा विज्ञान– परिभाषा एवं स्वरूप, भाषा विज्ञान का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध, भाषा विज्ञान के अंग, भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियाँ।

**इकाई–2** स्वन विज्ञान का स्वरूप, स्वन विज्ञान की शाखाएँ, वाग अवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वन परिवर्तन के कारण और दिशाएँ, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण

**इकाई–3** रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, शब्द और रूप (पद) का अन्तर, सम्बन्ध तत्व और अर्थ तत्व, व्याकरणिक कोटियाँ, रूपिम की अवधारणा और भेद।

**इकाई–4** वाक्य की परिभाषा, वाक्य के भेद, वाक्य–विश्लेषण, निकटस्थ अवयव विश्लेषण, गहन संरचना और बाह्य संरचना, वाक्य परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं।

**इकाई–5** अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ।

समाज भाषाविज्ञान, शैली विज्ञान और कोश विज्ञान का सामान्य परिचय।

---

संदर्भ ग्रन्थ :–


1. भाषा विज्ञान – डॉ० भोला नाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान और भाषा शास्त्र – कपिल देव द्विवेदी
3. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धान्त – डॉ० राम किशोर शर्मा
4. आधुनिक भाषा विज्ञान – कृपा शंकर सिंह एवं चतुर्भुज सहाय
5. भाषा विज्ञान की भूमिका – डॉ० देवेन्द्र नाथ शर्मा

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

# एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

## MHL-E314

## भारतीय साहित्य

पूर्णांक : 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन : 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1 भारतीय साहित्य का स्वरूप।
भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ।
भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब।
भारतीयता का समाजशास्त्र।
हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

इकाई – 2 1. **उपन्यास** – मृत्युंजय – वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य (असमिया)
2. **कविता संग्रह** – वर्षा की सुबह – सीताकान्त महापात्र (उड़िया)
3. **नाटक** – घासीराम कोतवाल – विजय तेंदुलकर (मराठी)

इकाई – 3 मराठी साहित्य का इतिहास।

इकाई – 4 हिन्दी और मराठी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन–
हिन्दी और मराठी निर्गुण संत काव्य का तुलनात्मक अध्ययन।
हिन्दी और मराठी कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन।
हिन्दी और मराठी राम काव्य का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई – 5 हिन्दी तथा मराठी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन।
हिन्दी और मराठी नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन।
हिन्दी और मराठी आधुनिक कविता का तुलनात्मक अध्ययन।

**संदर्भ सामग्री–**


1. भारतीय साहित्य – डॉ० नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
2. मराठी भाषा और साहित्य – राजमल बोरा, कालेज बुक डिपो, जयपुर।
3. मराठी भाषा और साहित्य – राजमल बोरा, गणेश अष्टेकर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. मराठी सन्त काव्य – वेद कुमार वेदालंकार, कालेज बुक डिपो, जयपुर।
5. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ – राम विलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. मराठी साहित्य : परिदृश्य – चंद्रकांत वांदिवडेकर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

# एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

## MHL-E315

## भाषा शिक्षण

पूर्णांक : 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1

- भाषा–शिक्षण : उद्देश्य और स्वरूप
- भाषा–शिक्षण के सिद्धान्त : उद्दीपन–अनुक्रिया पुनर्बलन सिद्धान्त, माध्यमीकरण, अंतर्जातक्षमता, संज्ञानात्मक विकास।
- भाषा–शिक्षण के संदर्भ में भाषा के प्रकार : मातृभाषा, द्वितीय भाषा। विदेशी भाषा, समतुल्य भाषा, परिपूरक भाषा, सहायक भाषा, संपूरक भाषा।

इकाई – 2

- मातृभाषा–शिक्षण और अन्य भाषा–शिक्षण में अंतर। द्वितीय भाषा–शिक्षण और विदेशी भाषा–शिक्षण।
- भाषा–शिक्षण की विधियाँ : व्याकरण–अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, श्रवण–भाषण विधि, अभिक्रमित स्वाध्याय विधि, संप्रेषणात्मक विधि।

इकाई – 3

- भाषा कौशल और उनका विकास : श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन कौशलों का स्वरूप और उनमें योग्यता प्राप्ति के विविध सोपान।
- भाषा–शिक्षण में उपयोगी साधन–सामग्री : औपचारिक भाषा–शिक्षण, नक्शे, चार्ट, चित्र, भाषा–प्रयोगशाला, अनौपचारिक भाषा–शिक्षण, आकाशवाणी, सिनेमा, दूरदर्शन आदि।

इकाई – 4

- भाषा–शिक्षण और अभिरचना अभ्यास : आधारभूत सिद्धान्त और मान्यताएँ, अभिरचना अभ्यास की सार्थकता और सीमाएँ।
- व्यतिरेकी विश्लेषण : आधारभूत सिद्धान्त और मान्यताएँ, भाषिक व्याघात। व्यतिरेकी विश्लेषण की प्रक्रिया, व्यतिरेकी विश्लेषण की सार्थकता और सीमाएँ।

इकाई – 5

- त्रुटि–विश्लेषण – आधारभूत सिद्धान्त और मान्यताएँ। त्रुटियों के स्रोत–अंतरभाषा की अवधारणा, शिक्षार्थी व्याकरण की संकल्पना और त्रुटि–विश्लेषण, त्रुटि–विश्लेषण की सार्थकता और सीमाएँ।
- भाषा–परीक्षण और मूल्यांकन, भाषा–शिक्षण में निदानात्मक और उपचारात्मक विधियाँ।
- द्वितीय और विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी भाषा–शिक्षण।
- हिन्दी उच्चारण, वर्तनी और व्याकरण का शिक्षण।

**संदर्भ सामग्री**


1. भाषा शिक्षण – डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
2. भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान – ब्रजेश्वर वर्मा
3. भाषा मूल्यांकन तथा परीक्षण – किशोरी लाल शर्मा
4. अन्य भाषा शिक्षण के कुछ पक्ष – अमर बहादुर सिंह
5. हिन्दी शिक्षण – कर्ण सिंह

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

# एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

## MHL-E316

## प्रयोजन मूलक हिन्दी

पूर्णांक 100 | लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

**इकाई–1** **हिन्दी के विभिन्न रूप**

सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।

कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य – प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण।

पारिभाषिक शब्दावली : स्वरूप एवं महत्त्व, पारिभाषिक शब्दावली–निर्माण के सिद्धान्त।

ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली का संक्षिप्त/सामान्य परिचय।

कम्प्यूटर : सामान्य परिचय, रूपरेखा, उपयोग, क्षेत्र तथा कम्प्यूटर की विशेषताएँ, इंटरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र।

**इकाई–2** **पत्रकारिता** : स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार। हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास। समाचार लेखन कला। सम्पादन के आधारभूत तत्त्व। व्यावहारिक प्रूफ शोधन। शीर्षक की संरचना, शीर्षक सम्पादन। सम्पादकीय लेखन। प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता।

**इकाई–3** **जनसंचार** : प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ। विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप – मुद्रण, श्रव्य, दृश्य–श्रव्य, इंटरनेट। मौखिक भाषा की प्रकृति। समाचार लेखन एवं वाचन। उद्घोषणा लेखन। विज्ञापन लेखन। फीचर।

**इकाई–4** **दृश्य – श्रव्य माध्यम** (फिल्म, टेलीविजनएवं वीडियो)

दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति। दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य। पटकथा लेखन। संवाद लेखन। साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण। विज्ञापन की भाषा।

इंटरनेट : सामग्री सृजन

**इकाई–5** **अनुवाद** – अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि। अनुवाद के प्रकार, हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका। कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद। वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद का महत्त्व। साहित्यिक अनुवाद के सिद्धान्त एवं व्यवहार।

---

संदर्भ ग्रन्थ :–


1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – सम्पादक रविन्द्रनाथ प्रसाद, के०हि० संस्थान
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ० नरेश मिश्र, राजपाल एण्ड संस कश्मीरी गेट, दिल्ली
3. प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन – भोलानाथ तिवारी
4. कम्प्यूटर और हिन्दी – डॉ० हरिमोहन
5. प्रशासनिक हिन्दी : टिप्पण प्रारूपण एवं पत्र लेखन – हरिमोहन
6. प्रयोजन मूलक हिन्दी और उसका अनुप्रयोग – डॉ० ज्ञान चन्द रावल

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

# एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

## MHL-E317

## नाटक और रंगमंच

पूर्णांक 100 | सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

---

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1 (व्याख्या)

1. अजात शत्रु – जयशंकर प्रसाद
2. कोमल गांधार – डॉ० शंकर शेष
3. कौमुदी महोत्सव – डॉ० राम कुमार वर्मा
4. अंधा युग – धर्मवीर भारती

इकाई – 2

- नाटक और रंगमंच का स्वरूप
- नाट्योत्पत्ति सम्बन्धी विविध मत
- नाट्य अध्ययन का स्वरूप
  - नाटक का विधागत वैशिष्ट्य
  - नाटक और रंगमंच का अंतःसंबंध
  - नाटक में दृश्य और श्रव्य तत्वों का समायोजन

इकाई – 3 नाट्य–भेद

– भारतीय रूपक–उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)

– पारम्परिक नाट्य–रूप : रामलीला, रासलीला, स्वांग, नौटंकी, माच, ख्याल, विदेसिया आदि।

– पाश्चात्य नाटक (सामान्य परिचय)

इकाई – 4

- नाट्य–विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन
- रंगमंच के प्रकार, रंगशिल्प, रंग संप्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)
- विश्व के प्रमुख रंग चिंतक : भरत, स्तानिस्लाव्स्की, ब्रेख्त के अभिनय–सिद्धान्त।

इकाई – 5

- हिन्दी नाटक और रंगमंच का संक्षिप्त इतिहास–

  – नाटक का विकास : भारतेन्दु युग, प्रसाद युग, स्वातंत्र्योत्तर काल, नया नाटक।

  रंगमंच : लोक–नाट्य (व्यावसायिक, अव्यावसायिक)

  – पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, प्रमुख सरकारी रंग संस्थाएँ, नुक्कड़ नाटक।
- हिन्दी नाट्य–चिंतन – भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश।

**संदर्भ ग्रन्थ–**


1. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास – डॉ० दशरथ ओझा
2. आधुनिक भारतीय नाट्य विमर्श – जयदेव तनेजा
3. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी
4. नाटक तथा रंग परिकल्पना – गिरीश रस्तोगी

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

# एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

## MHL-E318

## दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन

पूर्णांक 100 लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

**इकाई–1** माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार, हिन्दी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास, रेडियो नाटक की प्रविधि, रंग नाटक, पाठ्य नाटक और रेडियो नाटक का अन्तर।

**इकाई–2** रेडियो नाटक के प्रमुख भेद – रेडियो धारावाहिक, रेडियो रूपांतर, रेडियो फैन्टेसी, संगीत रूपक, आलेख रूपक (डाक्यूमेंट्री फीचर)।

**इकाई–3** टी०वी० नाटक की तकनीक, टेली ड्रामा, टेली फिल्म, डाक्यूड्रामा तथा टी०वी० धारावाहिक में साम्य–वैषम्य, संचार माध्यम के अन्य विविध रूप।

**इकाई–4** साहित्यिक विधाओं की दृश्य–श्रव्य रूपांतरण–कला। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन–संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि।

**इकाई–5** संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा। विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि। संचार माध्यमों की भाषा, हिन्दी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ।

**संदर्भ ग्रन्थ**


1. मीडिया लेखन – डॉ० रमेशचन्द्र त्रिपाठी
2. टेलीविजन समाचार – शकील हसन समसी
3. दूरदर्शन संचार माध्यम – इग्नू, नई दिल्ली
4. इलैक्ट्रानिक मीडिया – टी०डी०एस० आलोक
5. जनसंचार : बदलते परिप्रेक्ष्य में – डॉ० बलबीर कुन्दरा